माहुल पौधा रोपण – संयुक्त वन प्रबंधन की रचनात्मक पहल

दक्षिण कोण्डागांव वनमण्डल अंतर्गत वर्ष 2005-06 में माहुल बीज का संग्रहण समीपस्थ वन क्षेत्र से किया गया एवं केन्द्रीय रोपणी कुम्हारपारा में 15 X 15 से.मी. साईज के पॉलीथीन बैग में उपजाऊ मिट्टी, गोबर खाद, आवश्यकतानुसार रेत तथा वर्मीकम्पोस्ट खाद के अनुपातिक मात्रा में मिश्रण तैयार कर पॉलीथीन बैग में उपचारित बीज बुआई माह फरवरी 2006 के द्वितीय सप्ताह में किया गया। रोपणी में माहुल पौधों की औसतन ऊंचाई 20 से.मी. के लगभग होने पर अतिक्रमण व्यवस्थापन के बदले वृक्षारोपण क्षेत्र मालगांव आरक्षित वन खंड क्रमांक 559, 564 रकबा 35.000 हेक्टेयर क्षेत्र में जुलाई 2006 में रोपित किया गया।

माहुल *(Bauhinia vahallai)* बहुवर्षीय लता है जो मुख्य तौर पर साल वृक्ष पर चढ़ती है। इस पौधे में फूल एवं फल तीन से चार वर्ष में आते हैं, चूंकि यह छायापेक्षी है और लता चढ़ने के लिए आधार चाहिए, अतः समस्त माहुल के पौधे साल वृक्षों के 45 से.मी. दूर इस प्रकार रोपित किये गये कि समय आने पर वृक्ष का सहारा ले सकें।

समस्त माहुल पौधे पूरे 35.000 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए हैं जिसमें कोई नियमित अंतराल नहीं है। इसके अलावा मृदा स्थलाकृति या वनस्पतिक संयोजन का भी कोई विशिष्ट आधार न रखते हुए साल वृक्षों के उपलब्धता को ही प्राथमिकता दी गई है।

रोपण के लगभग 2 वर्ष बाद जीवित पौधों का प्रतिशत 80 है तथा पौधों की ऊँचाई लगभग 1 मी. से 2 मी. तक हो गई है, एवं पौधे स्थापित हो गये हैं।

माहुल पत्ता जन-जन सर्वहारा वर्ग के भोजन में पत्तल के रूप में प्रयुक्त होता है तथा इसकी आवश्यकता नित्य निरंतर बनी रहेगी इसलिए इसका उत्पादन आज की आवश्यकता है। अतः प्राथमिकता के आधार पर इसकी इकाईयों की स्थापना की जाना है। इस बाबत राज्य स्तर पर उक्त कार्य नैसर्गिक वन क्षेत्रों में कराया जा रहा है जिससे अदिवासियों को अधिक रोजगार के साधन उपलब्ध हो सके।

माहुल पौधारोपण